

याद का वाद हकीकत किमत
 कारा में निर्दिष्ट पक्षक से लिखा
 जाकर शाखिल फिलहाल किमत
 शकल निर्दिष्ट फल नार्क लखने
 टाट मोदिकां को लखीर जारी
 हो पञ्जाबी केवल शुमार होकर
 डाखिल समेट हो

